

कारगलि वजिय दविस

प्रलिमिन्स के लयि:

[कारगलि वजिय दविस](#), [कारगलि युद्ध](#), [परमाणु संपन्न राष्ट्र](#), [सयिाचनि गलेशयिर](#), [लाहौर घोषणा](#), [कशमीर संघर्ष](#), [नयितरण रेखा \(LOC\)](#), [ऑपरेशन वजिय](#), [ऑपरेशन सफेद सागर](#), [ऑपरेशन तलवार](#), [कारगलि समीक्षा समतिि \(KRC\)](#), [कोलड स्टार्ट सदिधांत](#) ।

मेन्स के लयि:

भारत के पड़ोस में स्वतंत्रता के बाद के घटनाक्रमों का महत्त्व और उनके प्रभाव ।

[स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस](#)

चर्चा में क्यों?

[कारगलि युद्ध](#) (वर्ष 1999) में देश के लयि सर्वोच्च बलदिान देने वाले भारतीय सैनिकों के शौर्य, पराक्रम व बहादुरी के सम्मान में श्रद्धांजलि अर्पति करने हेतु प्रत्येक वर्ष 26 जुलाई को [कारगलि वजिय दविस](#) मनाया जाता है ।

- यह स्मृतिदविस भारत और पाकस्तान के बीच मई 1999 में शुरू हुए कारगलि युद्ध के समापन का प्रतीक है ।

//



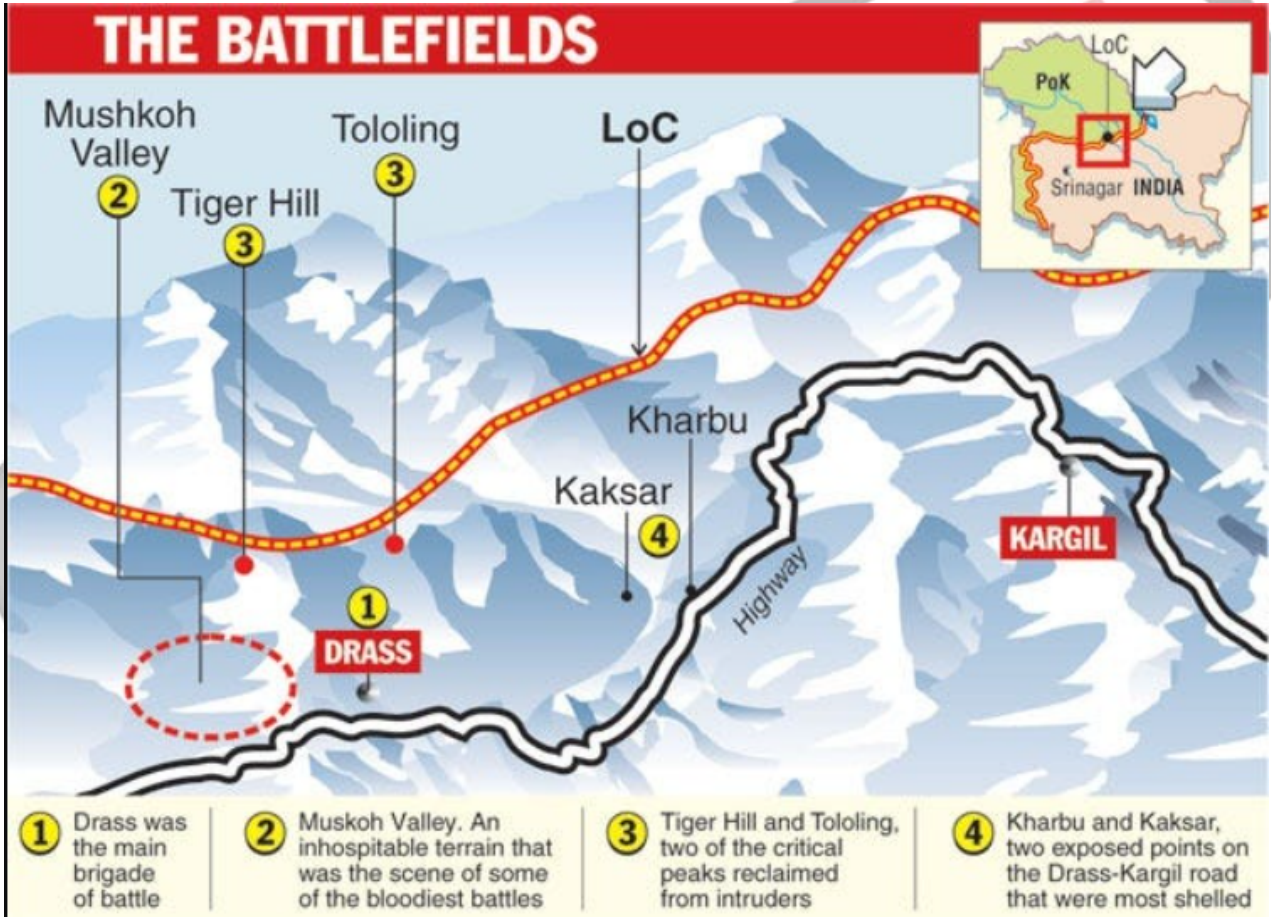
कारगलि वजिय दविस क्या है?

- **परचिय:** कारगलि वजिय दविस या कारगलि वकिट्टरी डे, भारत में **प्रतविर्ष 26 जुलाई** को मनाया जाने वाला एक महत्त्वपूर्ण दनि है ।

- यह दनि वर्ष 1999 में पाकस्तान के साथ संघर्ष में **भारत की वजिय/जीत का स्मरण** कराता है और युद्ध के दौरान भारतीय सैनिकों की बहादुरी एवं बलदिन का सम्मान करता है ।
- वर्ष 1999 का कारगलि युद्ध परमाणु संपन्न दक्षिण एशिया में पहला सैन्य संघर्ष/युद्ध था जो यकीनन **दो परमाणु संपन्न देशों** के बीच **पहला वास्तविक युद्ध** था ।

■ पृष्ठभूमि:

- भारत और पाकस्तान के बीच संघर्षों का इतिहास रहा है, जिसमें वर्ष 1971 का एक महत्त्वपूर्ण संघर्ष भी शामिल है, जिसके कारण **बांग्लादेश का गठन** हुआ ।
- वर्ष 1971 के बाद, दोनों देशों ने विशेष रूप से नकिटवर्ती पर्वत शृंखलाओं पर सैन्य चौकियों के माध्यम से **सियाचिनि ग्लेशियर** पर नियंत्रण की होड़ में नरितर तनाव का सामना किया ।
- वर्ष 1998 में, दोनों देशों ने **परमाणु परीक्षण** किये जिससे तनाव बढ़ गया । फरवरी 1999 में **लाहौर घोषणा** का उद्देश्य **कश्मीर संघर्ष** को शांतपूरण और द्विपक्षीय रूप से हल करना था ।
- वर्ष 1998-1999 की सर्दियों के दौरान पाकस्तानी सशस्त्र बलों ने **कारगलि, लद्दाख के द्रास व बटालिकि सेक्टर में NH 1A पर** स्थिति कलिबंद ठकानों पर कब्जा करने के लिये **नयितरण रेखा (LOC)** के पार **गुप्त रूप से सैनिकों को प्रशिक्षित और तैनात** किया ।
- भारतीय सैनिकों ने पहले तो इसे **घुसपैठियों को आतंकवादी या 'जहादी' समझा**, लेकिन जल्द ही स्पष्ट हो गया कि यह हमला एक **सुनयोजित सैन्य अभियान** था ।
- यह युद्ध वर्ष 1999 की गर्मियों में कारगलि सेक्टर में **मश्कोह घाटी से लेकर तुरतुक तक** फैली 170 किलोमीटर लंबी पर्वतीय सीमा पर लड़ा गया था ।
- इसके प्रत्युत्तर में, **भारत ने ऑपरेशन वजिय** की शुरुआत की, जिसमें घुसपैठ का मुकाबला करने के लिये 200,000 से अधिक सैनिकों को तैनात किया गया ।



■ कारगलि युद्ध दविस का महत्त्व:

- वर्ष 1999 में युद्ध के दौरान वीरगति को प्राप्त हुए भारतीय सैनिकों की स्मृति में उनका सम्मान करने के लिये 26 जुलाई को **कारगलि वजिय दविस** के रूप में मनाया जाता है ।
- वर्ष 2000 में द्रास में **कारगलि युद्ध स्मारक** की स्थापना भारतीय सेना द्वारा वर्ष 1999 में ऑपरेशन वजिय की सफलता की याद में बनाया गया था ।
 - बाद में वर्ष 2014 में इसका जीर्णोद्धार किया गया । **जम्मू और कश्मीर के कारगलि ज़िले के द्रास शहर में स्थिति होने के कारण** इसे **"द्रास युद्ध स्मारक"** के रूप में भी जाना जाता है ।
- **राष्ट्रीय युद्ध स्मारक** का उद्घाटन वर्ष 2019 में किया गया । यह उन सैनिकों को समर्पित है जिन्होंने वर्ष 1962 में चीन-भारत युद्ध, वर्ष 1947, वर्ष 1965 और वर्ष 1971 में भारत-पाक युद्ध, श्रीलंका में वर्ष 1987-90 में भारतीय शांति सेना के

ऑपरेशन और वर्ष 1999 में कारगलि संघर्ष सहित विभिन्न संघर्षों व मशिनों में अपने प्राणों की आहुति दी।

कारगलि युद्ध का प्रभाव:

- नयित्रण रेखा (LoC) की वैश्विक मान्यता: अंतरराष्ट्रीय समुदाय ने नयित्रण रेखा को भारत तथा पाकस्तान के बीच वास्तविक सीमा के रूप में मान्यता दी है, जिससे जम्मू और कश्मीर की कषेत्रीय अखंडता पर भारत के रुख को बल मिला है।
- मज़बूत रणनीतिक साझेदारी: कारगलि ने भारत-अमेरिका संबंधों में भी महत्त्वपूर्ण मोड़ का प्रतिनिधित्व किया। भारत को अंतरराष्ट्रीय कषेत्र में एक ज़मिंदार परमाणु शक्ति के रूप में मान्यता दी गई, जिससे रणनीतिक साझेदारी के अगले चरण का मार्ग प्रशस्त हुआ, जिसकी परिणति भारत-अमेरिका परमाणु समझौते के रूप में हुई।
- कूटनीतिक लाभ: युद्ध ने पाकस्तान पर काफी कूटनीतिक दबाव डाला, जिसकी परिणति 4 जुलाई 1999 को पाकस्तान के प्रधानमंत्री नवाज़ शरीफ की संयुक्त राज्य अमेरिका की उच्चस्तरीय यात्रा के रूप में हुई, जिसके दौरान उन्हें अमेरिकी राष्ट्रपति की ओर से फ़ोडी आलोचना का सामना करना पड़ा। पाकस्तान की कार्रवाइयों की इस अंतरराष्ट्रीय नदि ने उसे कूटनीतिक रूप से अलग-थलग करने में सहायता की।
- परमाणु कूटनीति पर प्रकाश डालना: इस संघर्ष ने भारत और पाकस्तान के बीच अस्थिर संबंधों की ओर वैश्विक ध्यान आकर्षित किया, विशेषकर परमाणु जोखिमों के संबंध में। युद्ध ने परमाणु-सशस्त्र कषेत्र में संघर्ष के बढ़ने की संभावना को रेखांकित किया।
- वैश्विक धारणा पर प्रभाव: इस युद्ध ने भारत की सैन्य क्षमताओं और कषेत्रीय संघर्षों का प्रभावी ढंग से प्रबंधन करने तथा उनका जवाब देने की उसकी क्षमता को उजागर किया, जिससे मज़बूत रक्षा क्षमताओं के साथ एक उभरती हुई शक्ति के रूप में उसकी वैश्विक छवि मज़बूत हुई।

कारगलि युद्ध से जुड़े ऑपरेशन

- ऑपरेशन वजिय: ऑपरेशन वजिय कारगलि कषेत्र में पाकस्तानी घुसपैठ के लिये भारत की सैन्य प्रतिक्रिया का कोड नाम था।
 - इस ऑपरेशन का उद्देश्य नयित्रण रेखा (LoC) के भारतीय हिससे से घुसपैठियों को हटाना और व्यवस्था तैनात करना था।
- ऑपरेशन सफ़ेद सागर: भारतीय वायुसेना ने ज़मीनी अभियानों को समर्थन देने के लिये "ऑपरेशन सफ़ेद सागर" चलाया। उच्च तुंगता वाले अभियानों में MiG-21s, MiG-23s, MiG-27s, मरिज 2000 और जगुआर जैसे विमानों का इस्तेमाल किया गया।
- ऑपरेशन तलवार: भारतीय नौसेना के "ऑपरेशन तलवार" ने समुद्री सुरक्षा और प्रतिरोध सुनिश्चित किया। नौसेना की तत्परता ने पाकस्तान को आगामी आक्रामकता के संभावित प्रतिक्रियाओं के बारे में एक कड़ा संदेश दिया।

कारगलि युद्ध के बाद क्या सुधार किये गए?

- सुरक्षा कषेत्र में सुधार: कारगलि युद्ध ने भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा ढाँचे की समीक्षा को प्रेरित किया, जिससे पारदर्शिता बढ़ी और के. सुब्रह्मण्यम के नेतृत्व में कारगलि समीक्षा समिति (KRC) की स्थापना हुई। KRC रिपोर्ट ने खुफिया, सीमा और रक्षा प्रबंधन में कमियों को उजागर किया, जिससे सुरक्षा कषेत्र में महत्त्वपूर्ण सुधार तथा संस्थागत परिवर्तन हुए।
- चीफ ऑफ़ डफ़ेंस स्टाफ़ (CDS) का गठन: इसका गठन सेना, नौसेना और वायु सेना के बीच "संयुक्तता" को बढ़ावा देने के लिये किया गया था।
 - CDS सरकार के एकल-बद्ध सैन्य सलाहकार के रूप में कार्य करता है और तीनों सेवाओं के एकीकरण की देखरेख करता है।
- त्रि-सेवा कमानों की स्थापना: अंडमान और निकोबार कमान को भविष्य के थ्रिटर कमानों के लिये एक परीक्षण स्थल के रूप में बनाया गया था, जिसमें सेना, नौसेना और वायु सेना के संसाधनों को एकीकृत किया गया था।
- खुफिया सुधार: तकनीकी खुफिया क्षमताओं को बढ़ाने के लिये राष्ट्रीय तकनीकी अनुसंधान संगठन (NTRO) की स्थापना की गई।
 - रक्षा खुफिया एजेंसी (DIA) का गठन तीनों सेवाओं में खुफिया जानकारी के समन्वय हेतु किया गया था।
 - तकनीकी समन्वय समूह का गठन उच्च तकनीक खुफिया अधिग्रहण की नगिरानी हेतु किया गया था।
 - राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (NSA) को सभी खुफिया एजेंसियों का समन्वयक नियुक्त किया गया, जो NTRO की नगिरानी करेंगे और बेहतर खुफिया एकीकरण सुनिश्चित करेंगे।
- सीमा प्रबंधन में सुधार: घुसपैठ को रोकने के लिये सीमा पर बेहतर नगिरानी और गश्त। सीमा सुरक्षा हेतु बेहतर तकनीक की तैनाती। उदाहरण के लिये, थर्मल इमेजिंग कैमरे, मोशन सेंसर और रडार सस्टिम की स्थापना।
- परिचालन सुधार: हथियार प्रणालियों, तोपखाने और संचार उपकरणों का आधुनिकीकरण किया गया। उच्च तुंगता पर होने वाले युद्ध और संयुक्त अभियानों के लिये विशेष प्रशिक्षण पर अधिक ध्यान दिया गया। उदाहरण के लिये, धनुष आर्टिलरी गन, आकाश सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल आदि।
- बेहतर समन्वय और संचार: बेहतर समन्वय सुनिश्चित करने के लिये सेना, नौसेना और वायु सेना के बीच संयुक्त अभ्यास तथा संचालन पर ज़ोर दिया गया। विभिन्न एजेंसियों और सैन्य शाखाओं के बीच खुफिया जानकारी के वास्तविक समय के आदान-प्रदान के लिये उन्नत तंत्र स्थापित किए गए।
- आतंकवाद वरिधी उपाय: इंटरनेशनल ब्यूरो (IB) प्रमुख आतंकवाद वरिधी एजेंसी बन गई। विभिन्न सुरक्षा एजेंसियों के बीच आतंकवाद वरिधी क्षमताओं और समन्वय को मज़बूत किया गया।
- स्वदेशी सैटेलाइट नेविगेशन सस्टिम: अमेरिकी सरकार द्वारा बनाए गए अंतरिक्ष-आधारित नेविगेशन सस्टिम से महत्त्वपूर्ण जानकारी मलि सकती थी, लेकिन अमेरिका ने भारत को इससे वंचित कर दिया। स्वदेशी सैटेलाइट नेविगेशन सस्टिम की आवश्यकता पहले से ही महसूस की जा रही थी, लेकिन कारगलि के अनुभव ने देश को इसकी अनिवार्यता का एहसास कराया। उदाहरण के लिये भारतीय कषेत्रीय नेविगेशन सैटेलाइट सस्टिम (IRNSS) का विकास।
- सैद्धांतिक परिवर्तन: युद्ध ने भारतीय सैन्य सद्धांतों के विकास को उत्पन्न कर दिया, जिसमें कोलड स्टार्ट सद्धांत भी शामिल है। कारगलि ने बहुआयामी छद्म युद्धों को कम करने और भविष्य की सैन्य रणनीतियों को आकार देने के लिये एक समग्र सद्धांत की आवश्यकता पर प्रकाश डाला।

नष्कर्ष

वर्ष 1999 का कारगलि युद्ध भारत के लिये एक महत्त्वपूर्ण घटना थी, जसिने इसकी सैन्य रणनीति और राष्ट्रीय सुरक्षा नीतियों को महत्त्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया। ऑपरेशन वजिय की सफलता ने रणनीतिक क्षेत्रों पर नियंत्रण बहाल किया और भारत की रक्षा क्षमताओं को मजबूत किया। युद्ध ने मजबूत सुरक्षा उपायों की आवश्यकता को उजागर किया और राष्ट्रीय सुरक्षा बुनियादी ढाँचे में बड़े सुधारों को प्रेरित किया। इसने नियंत्रण रेखा (LoC) को एक प्रभावी अंतरराष्ट्रीय सीमा के रूप में फिर से स्थापित किया और कोल्ड स्टार्ट सदिधांत जैसे नए सैन्य सदिधांतों के विकास को गति दी। संघर्ष की वरिषत भारत की रक्षा रणनीतियों और कूटनीतिक संबंधों को आकार देना जारी रखती है।

?????? ???? ????:

प्रश्न: वर्ष 1999 के कारगलि युद्ध ने दक्षिण एशियाई क्षेत्र की क्षेत्रीय गतिशीलता पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव डाला। चर्चा कीजिये।

UPSC यूपीएससी सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न (PYQ)

??????

प्रश्न. “भारत में सीमा पार से बढ़ते आतंकवादी हमले और पाकस्तान द्वारा कई सदस्य-राज्यों के आंतरिक मामलों में बढ़ता हस्तक्षेप SAARC (दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन) के भवषिय के लिये अनुकूल नहीं है।” उपयुक्त उदाहरणों के साथ समझाएँ। (वर्ष 2016)

प्रश्न. आतंकवादी हमलों के खिलाफ सशस्त्र कार्रवाई के संबंध में अकसर ‘हॉट परस्यूट’ और ‘सर्जिकल स्ट्राइक’ शब्दों का प्रयोग किया जाता है। ऐसी कार्रवाइयों के रणनीतिक प्रभाव पर चर्चा कीजिये। (वर्ष 2016)

प्रश्न. आतंकवादी गतिविधियों और आपसी अविश्वास ने भारत-पाकस्तान संबंधों को धूमलि कर दिया है। खेल और सांस्कृतिक आदान-प्रदान जैसी सॉफ्ट पावर का उपयोग कसि हद तक दोनों देशों के बीच सद्भावना उत्पन्न करने में मदद कर सकता है। उपयुक्त उदाहरणों के साथ चर्चा कीजिये। (2015)

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/kargil-vijay-diwas-1>

